# अनजाना सफ़र

(कविता, शे'रों शायरी का संग्रह)

**लेखक/कवि**

रोहित सिड केबी

rohitsidkb@gmail.com

rohit-sidkb.blogspot.com

# दो शब्द

ये छोटा सा संग्रह मेरी कुछ यादगार रचनाओं का संग्रह है। मेरी एक पसंदीदा पंक्ति है, “जितने भी पूरे किस्से हैं, उतने अधूरे किस्से हैं” ये तो अभी अधूरा ही किस्सा है, मेरा ही क्या, इस दुनिया में सबके अधूरे ही किस्से हैं। अभी तो बहुत कुछ लिखा जाएगा। इन मेरी प्रत्येक रचनाओं के साथ एक एक यादें जुड़ी हैं, लेकिन प्रत्येक में भी नहीं, कुछ तो मनगढ़ंत भी हैं, जैसे वो पंक्ति है, “औरों के दुःख में ये प्रेम कवि क्यूँ रोता है”। मुझे तो कविताओं का बिल्कुल भी शौक नहीं था। मुझे कविता शायरी लिखने का शौक़ कब चढ़ा ये किसी विस्तृत लेख में लिख कर बताऊँगा, अभी इसे ही पढ़िए, यहाँ इस किताब में केवल मेरी कविता, शायरी ही है। मेरा एक ब्लॉग भी है जहाँ मैं सारी रचनायें पोस्ट कर्ता रहता हूं। यहाँ इस किताब में वही सब मेरी रचनाएं हैं जो मेरे ब्लॉग पर मौजूद है।

# ये सब सच बोलते हैं

सुबह की वो ताजगी,

शाम की वो सादगी;

ये सूरज, चांद-सितारे,

नदियों के बहते धारे;

बारिश की बूंदे छम-छम,

गाते शाखों पर पत्ते हर दम;

ये सब सच है,

ये सब सच बोलते हैं।

# मंज़िल

काँटों भरी राह पर चलना ही सही
सुकूँ तो है कि चल रहा हूँ मैं

रात अंधेरी सही रोशनी तो नहीं
सुबह के लिए रात ढल तो रही

दूर कहीं मंज़िल हो तो क्या
रास्ता भी हो कठिन ही सही

सुकूं तो है कि चल रहा हूँ मैं।

## दौड़ते भागते

म◌ेरा प्रातः मुझे पुकारता है

तिमिर को पीछे छोड़ता चला

पुष्प बिछे हैं नव पथ पर

पथरीले पथ पर दौड़ता चला

पग मेरा होता है घायल

घाव को मैं छुपाता चला

## गलतफहमियां

हम बैठे थे घरों में बाहर मिरे नाम के इश्तेहार छपे

गुनाहगार कोई और था बदनाम हम भी हो गये

गलतफहमियों का कोई इलाज नहीं ये लाइलाज बीमारी है

दिन में ही आँखें बंद करके ये समझना कि मैंने रात गुज़ारी है

## हूँ मुसाफ़िर मैं इक अनजाना

मुझसे कोई प्रीत ना रखना

हूँ मुसाफ़िर मैं इक अनजाना

आए दुनिया में अकेले

इक दिन अकेले ही जाना

ढलता सूरज,

ढल जाऊँगा इक दिन

मुझसे कोई प्रीत ना रखना

कुछ दिन का है और बसेरा

छोड़ बसेरा फिर ना आना

मुसाफ़िर आते जाते और रहेंगे

ना इनका कोई और ठिकाना

ये निशान आखिरी कदमों के

थक के शायद वहीं गिर पड़ूँ

साँसों का भी यही बहाना

हूँ मुसाफ़िर मैं इक अनजाना

मुझसे कोई प्रीत ना रखना

## शीशा टूट के बिखर इतना गया

शीशा टूट के बिखर इतना गया

दुबारा फिर वो ना सिमटा गया

लेके ज़मी से अर्श तक

आहों का राग गूँजता गया

बादल बरसते रहे

ज़मी से आग निकलता गया

हवाएं तूफ़ान बनकर

बस्तियों को उजाड़ता गया

ख़ामोश क्यूँ रहा “केबी”

क्यूँ नहीं कुछ बोलता गया

## मैं अनजान हूँ

मैं अनजान हूँ

मैं हैरान

अपनी बातों से परेशान हूँ

आँखों में अथाह सागर लिए

पलकों की चादर लिए

छुपाए आंसूं

न बहाए आंसूं

वीरानों में वीरान हूँ

## ज़िंदगी को कुछ इस क़दर भुला बैठे

ज़ििंदगी को कुछ इस क़दर भुला बैठे

हम ख़ुद से ख़ुद ही का हाल सुना बैठे

मिरे हाथों में ज़िंदगी के कुछ ही पल सही

अपनी आँखों में उम्मीदों का दिया जला बैठे

पथरीली-काँटों भरी राहों में चलते चला जाऊँ
अपनी मंज़िल से दिल-ओ-जान लगा बैठे

अब ख़ुद को कहीं और ढूँढना बंद कर “केबी”
क्यूँ बेफ़िक्र बेफ़ज़ूल अपना होश गँवा बैठे

# किसी को क्या फर्क़ पड़ता है

कि‍सी को क्या फर्क़ पड़ता है
मेरा दिल रोए या हँसता है

रात की चाँदनी रात कभी तो होगी
ये सोच सोच के रात रात बिताता है

हालात मिरे मुझको इधर रुसवा किए

उधर भी मुझको इक डर सताता है

मेरी बातों का मतलब साफ़ है
मेरा ये ही इक अफ़साना रहता है

“केबी” तेरी सादगी अभी गई नहीं,
हर बात का मतलब बताता फिरता है।

## कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है

कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है,
इंसान इंसान का नहीं होता है।
तेरी मासूमियत को उछाला जाएगा,
तेरी बातों को भी तौला जाएगा।
वहाँ तू किसी का भी नहीं होता है,
कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

तू किसी से वैर भी ना कर,
तू किसी को गैर भी ना कर।
तुझे ना चाह किसी की बात का,
नहीं नफ़रत किसी की बात का।
फिर भी तेरा हस्र बुरा ही होता है,
कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

तेरी भी मजबूरियाँ होंगी,
कुछ तो खामियाँ होंगी।
तुझे नफ़रत सी निगाहें देखेंगी,
तुझपर ज़ुल्म की आहें फेकेंगी।
तुझे अँधियारा दिखाई देता है,
कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

वो तुझको आजमाएंगे,
कभी तुझसे रूठ जायेंगे।
तुझको पता भी ना होगा,
कोई ख़ता भी ना होगा।
तेरा शिकार वो शिकारी होता है,

कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

कहीं इक तेरा किरदार होगा,
कहीं तेरी बातों का सार होगा।
कोई तेरी बातों को तोड़ेगा,
कोई बातों में तेरे किरदार को जोड़ेगा।
कोई यूँ ही तेरी जग-हँसाई करवाता है,
कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

गर तू मिट्टी में मिल जाएगा,
तुझपर फूल भी खिल जाएगा।
किसी के हाथों में फूल होगा,
कहीं किसी पैरों की धूल होगा।
फूल गिरा राज काँटों का होता है,
कभी-कभी या हरदम ऐसा ही होता है।

## ख़याल

कोई जब ख़याल आता है मन में
है उठता सवाल अपने ही धुन में

मैं सवालों में ही उलझा रहता

साँसें भी ना ले पाता सुकूं में।

ढलते सूरज को तकते मैं रहता

बैठे हुए मैं खुद से ये कहता

कल सूरज फिर से निकलेगा

वही होगा जो होता ही रहता।

## धोखेबाज मन

धोखा मन भी देता है

मन पर भी भरोसा ठीक नहीं

कर ले सुनिश्चित ये भी

मन को, औरों पर न आँख मूँद कर

यक़ीन तो नहीं है उनपर

हर एक नहीं कोई सही है

मन पर भी भरोसा ठीक नहीं

औरों का तो क्या कहना

अब गैरों का तो क्या कहना।

मन भी विचलित होता है

मन पर भी भरोसा ठीक नहीं

दुनिया तो है ही

हम अकेले हैं

मन भी एक छलावा है

मन भी धोखा देता है

औरों का तो क्या कहना

अब गैरों का तो क्या कहना।

कभी-कभी ही सही है

हर बार भी तो नहीं है

हर बार भी भरोसा ठीक नहीं

मन पर भी भरोसा ठीक नहीं

औरों का तो क्या कहना

अब गैरों का तो क्या कहना।

मन को भी परखा जाता है

औरों को भी देखा जाता है

एक बात से भरोसा ठीक नहीं

मन पर भी भरोसा ठीक नहीं

औरों का तो क्या कहना

अब गैरों का तो क्या कहना।

## अरे जनाब

हुआ क्या है जनाब,

यूँ गुमसुम से चल रहे,

इन हवाओं से तो वैर नहीं।

इश्क़ हुआ है जनाब,

कुछ मशवरा सुझावो,

अक्ल आ जाए मुझे भी।

थोड़ा मुस्कराइए जनाब,
यूँ ठीक नहीं उदासी,
नहीं तो आपकी खैर नहीं।

ये कैसा नशा है जनाब,
दिन-रात रहता है,
थोड़ा समझाए मुझे भी।

ये हाल कइयों का है जनाब,
हाले बयान-ए-सुनाऊँ क्या,
इससे भी तो कोई गैर नहीं।

## सब कुछ यहीं पर है

सब कुछ यहीं पर है,

और कुछ कहीं नहीं।

भागते हो क्यूँ इधर उधर,

मिलेगा कुछ सही नहीं।

कभी खयाल उस तरफ,

कभी धियान इस तरफ़।

सोच में पड़े रहो,

बात तो रही नहीं।

# सूरज की जलती किरनों से

सूरज की जलती किरनों से

अँधियारा डर कर भागा,

डूबते ही सूरज के

एक अंधकार फिर से जागा।

बाँध सिर पर किरनों को,

असंख्य उजियारा फैलाता चल,

डगर तो होगी पथरीली,

ठोकर को गले लगाता चल।

ये अँधियारा, ये उजियारा,

अस्त उदय होता ही रहेगा,

जाग गया एक बार उजियारा,

अँधियारा सोता ही रहेगा।

## पता नहीं

मन बहुत तेज है,

दिमाग का पता नहीं,

अंधेरी रात ही सही,

माहताब का पता नहीं।

हवाएँ राग सुनाती हैं,

आवाज का पता नहीं।

## अंधेरा

अंधेरा मिरे इर्द-गिर्द मंडराता रहा,

सितारे आँखों में झांकते रहे,

आँखों में जब तक तारों की चमक रही,

आँखों का खुला आसमाँ जागता रहा।

अंधेरी रातों का अफ़साना

करवटें बदले जाये ये रात

ये काली रातें यूँ ही रहेगी

सितारों को आँखों में लिए

घने बादल छा जाएँगे

सितारें छुप जाएँगे

## कवि / शायर

अलग छाप होती है

हाथ की लकीरों जैसी,

हर एक किताब पन्नों पर,

शायर के अल्फ़ाजों की,

कुछ अलग बात होती है|

सुने जो सुकून से सुने

हर पंक्ति पर ! वाह! होती है,

गर लिख दे पन्नो पर बारिश

लगे बरसात होती है|

अपने शब्द को लेकर

औरों के दुखों में रोता है,

चाह दे तो पूरी  कायनात झुक जाए,

उसके हर एक शब्द में जान होती है

## समय

जाने कैसा वो समय था पागल

अब क्या बोल रहा है तू

तन मन और हृदय की बेरुखी

बीते पल की लहरों सी हलचल।

पूछ रहा है घड़ी दो घड़ी पर

दुनियाभर के दुःख लिपटाए

चाहे समय बिताता हो भला

रुक जा पागल रुक जा पलभर।

## आसमाँ

“बेख़ौफ़ हो, बिना भय

ऊँचे उड़ते परिंदे आसमाँ लिए

नए नए उनके सुनहरे सपने

दिल के प्यारे प्यारे अरमाँ लिए।“

“सपनों को एक दिशा दे

छूकर आसमाँ की ऊँचाइयों को

ख़ुद से ख़ुद की पहचान कर

देख न मुड़ के अपनी परछाइयों को ।“

“आसमाँ के विशाल विस्तार को

हवाओं का जोर भी देख ले

घिर के आये उमड़ते बादल

दहाड़ते बिजलियों की शोर भी देख ले।“

## जिंदगी

कभी खुद पे तो कभी हालात पे रोना आया

जिंदगी अब तू बता मुझसे क्या हो ना पाया!

बड़ी जतन से तुझे ऐ जिंदगी हमने देखा, समझा
मैंने तुझको गले लगाया, तू ही ने गले से ना लगाया।

तेरी खुशियाँ, और तेरे गम को भी लेके देखा
कुछ ऐसा गम दिया, ना रोना और कभी ना हंसना आया

तू तो मुझको सोचने पर मजबूर कर देती है
तेरे साथ होके भी तुझसे कुछ कह ना पाया

## चलते चलते

चलते चलते यूँही चला जाता हूँ,

हर मोड़ पर थोड़ा रुक जाता हूं
थोड़ी सांस लेलू मैं थम के जरा
अभी दूर जाना है, चला जाता हूं

ना हार के मैं कभी भी रुका हूं
मेहनत का आदी हूं ना मैं थका हूं
खुद की मंजिल मैं खुद ही बनाता हूं

खुद पे ही मैंने भरोसा किया
न मैं किसी का सहारा लिया
अपने दम पे सारा मुकाम पाता हूं
चलते चलते यूँही चला जाता हूँ

ये सफ़र कभी भी रुकेगा नहीं
सर मेरा कभी भी झूकेगा नहीं
हार को भी जीत बना देता हूं
चलते चलते यूँही चला जाता हूँ

# आस

दिल की दरिया में तूफ़ान सा उठता है,

भँवरे मन को झकझोर देती है,

फिर भी मन मेरा चुपचाप बैठा है,

और आँखो से आँसुओं की धार बहती है ॥

॥ ज़िन्दगी ने दिए हैं इतने ज़ख्म,

आह परछाई से निकलती है,

गुज़ार लूँ कुछ पल और तन्हा,

मौत भी तो साथ चलती है ॥

॥ तेरी याद साथ बस तेरी याद है,

और ज़िन्दगी बहुत उदास है,

कुछ बचा ही नहीं इस दूनिया में,

अब तो तेरी याद ही मेरे पास है ॥

॥ ये रास्ते भी खो जाएँगे,

ये गलियाँ भी खो जाएँगी ,

होते ना तुम गर ज़िन्दगी में,

मेरी दुनिया भी खो जाएगी ॥

## वही तो किसान है

“कड़कती धुप हो या कड़ाके की सर्दी ,

वो कभी रुकता नहीं न कभी थकता है ,

दिन रात एक कर देता है ,

वही तो किसान कहलाता है। “

“न ज्यादा की ज़रुरत है ,

जो देती धरती माँ उसी में गुज़ारा होता है ,

कम भी तो चलेगा , अपने पथ पर,

वही तो किसान कहलाता है। “

ज़रुरत हो तो आधी रात को डट जाता है ,

रात को भी दिन सा बना देता है ,

जो अपनी मिट्टी से इतना प्यार करता है ,

वही तो किसान कहलाता है। “

प्रकृति छीन लेती , कभी देती है ,

कभी सूखा कभी बाढ़ नष्ट कर जाता है ,
फिर भी अगले बरस की आस लिए रहता है ,
वही तो किसान कहलाता है। "

"हर रोज अपनी फसल को निहारता है ,
एक -एक पत्ती  हर एक फूल को तकता है ,
हर एक पल जो चौकन्ना रहता है ,
वही तो किसान कहलाता है। "

"जब हल लेके चलता है खेतो में ,
हर तरफ मिट्टी उथल -पुथल कर देता है ,
उसमें बारिश कर अन्न की उसे उगाता  है ,
वही तो किसान कहलाता है। "

"पानी की धार को मोड़ लाता है ,
बड़े प्यार से खेतों में बहाता है ,
जो फसलों को जीवन देता है ,

वही तो किसान कहलाता है।

“गर गिर जाये दो चार दाने ज़मी पर ,

झुक कर बड़े प्यार से उठाता है ,

एक -एक को सजोता है ,

वही तो किसान कहलाता है। “

“जो शरहद पर , खेतों  में डटकर ,

देश को खिलाता , सुलाता है ,

अपनी परवाह किये बिना रहता है ,

वही तो किसान , देश का जवान कहलाता है। “

## भविष्य पर भरोसा मत रख

भविष्य पर भरोसा मत रख ,

वो तुझे क्या बताएगा कभी,

क्या खोना है, क्या पाना है ,

गर कर लिया पछतायेगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर,  वो तुझे, क्या बताएगा कभी।

भविष्य वर्तमान से बहुत छोटा है ,
दो पल थम कर कभी  सोचा है ,
जो होगा ,अगर चाहेगा कभी ,
भविष्य पर भरोसा मत कर,  वो तुझे, क्या बताएगा कभी।

खुद को, खुद से कमज़ोर मत कर ,
ठान ले तू , खुद से डर मत कर ,
तभी कश्ती पार लगाएगा कभी ,
भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी।

चार कदम चल के तो देख ,
हर राह कठिन है , कर परख ,
तभी जीवन में आगे जाएगा  कभी ,
भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी।

ऐसे विचार क्यों रखते हो मन में ,
जिससे घबराहट सी होती है तन  में ,
न ऐसे विचारो को मन में लाएगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

दिन के बाद अंधियारा होता है ,

यही तो वर्तमान कहलाता है ,

आगे की मत सोच , आगे पछतायेगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

छोड़ संसार मनुष्य छोड़ के जाता है ,

वो कभी ना , आगे का सोच के जाता है ,

तू भी ये संसार भूल जायेगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

चाँद तारे भी चलते है वर्तमान में ,

ये उलझते न कभी भविष्य के जाल में ,

ये समय भी कट जायेंगे कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

इस दुनिया के रस्ते , उलझे धागे हैं ,

कोई न जाने क्या आगे है ,

इस धागे को सुलझाएगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

पेड़ से पूछो , हमेशा तन के खड़ा रहता है ,

अपनी जड़ों की मजबूती से जड़ा रहता है ,

वो भी आँधियों से टकराएगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

आगे की नहीं , मन की सोच ,

भूत नहीं , वर्तमान की सोच,

ज़िन्दगी को खुद से निभाएगा कभी ,

भविष्य पर भरोसा मत कर , वो तुझे, क्या बताएगा कभी|

## सूरज भी अपनी मुट्ठी में होगा।

स◌ूरज भी अपनी मुट्ठी में होगा

तारों की क्या मजाल है ,

नामुमकिन को भी कर गुज़रेंगे

अपनी कोशिश ही अपनी ढाल है|

जीवन के इस सफर में चलते -चलते

न जाने आ गए हम कहाँ ,

भूल जायेंगे उन सारी बातों को

जीवन के दो पल बिताये जहाँ।

ढल जायेगा ये सूरज और

काली रातों का सफर आएगा ,

बैठे है सुबह के इंतज़ार में

फिर कोई  गम का हमसफ़र आएगा ,

चलते हुए अक्सर ठोकर भी खाते हैं

गिरते भी हैं और संभलते भी हैं ,

कट जायेंगे कट  जायेंगे ये सफर यूँ ही चलते -चलते

ये पथरीले रस्ते बदलते भी हैं।

दुःखो का वक़्त , ख़ुशी का पल

क्या दोनों एक  साथ आते है ,

कभी खुशियों की बरसात आती है

कभी दुःखों के बादल छाते है।

काल कोठरी की बेड़ियों को तोड़कर
चले जा खुले आसमान में ,
जो चाहे तू कर सकता है
पंख पसारे अपनी उड़ान में।

दूर से हर चीज़ छोटी नज़र आती है
धीरे -धीर कदम बढ़ाएंगे  हम ,
आँखे ओझल क्यों न हो जाये
हर चीज़ को बड़ा कर जायेंगे हम।

हम मानव की मंशा होती है
असम्भव को संभव करने की ,
हर चीज़ कदमो में होगी
गर ठान ली प्रारम्भ करने की।

# जो सोच लिया है

जो सोच लिया है मन में, करने का

हर कठिनाई को कुचलने का,

हम तो दरिया को भी लाँघ सकते हैं

डर नहीं है अब डरने का ।

जिस कार्य में मन केन्द्रित हो

अपनी छवि वही अंकित हो,

कितना भी आँधी आ, तूफान आ

हर आफत हमसे कम्पित हो ।

जिस की आस लगाए हम बैठे थे

उसके ख्याल भी बीते कैसे थे,

जब पूरी हुई मेरी आस

हकीकत भी सपने जैसे था।

वैसे तो सपने छलावे हैं, फिर भी मैने भरोसा किया

उस सपने की फिक्र में, याद मैने हमेशा किया,

जब पूरा हुआ, तब जाना, ये भी सच होते हैं

जैसा ख्वाब दिखाया नींदोंने, हकीकत में वैसा किया ।

दूनिया कूछ भी पढ़ाए, अपने ज्ञान की सुनो
ये भटकाती बहुत है, बस ध्यान की सुनो,
बवंडर के जैसे चक्कर काट के थम जाएगा
मन की, मष्तिष्क की और अपने प्राण की सुनो ।

## तस्वीरें बोलतीं हैं अतीत की

तस्वीरें बोलतीं हैं अतीत की,
सुख-दुःख के पलों को टटोलती हैं,
अब तो तस्वीरें बोलती हैं अतीत की ।

बीते हुए लम्हों को याद करो,
कुछ बरस ही बीते हैं,
लगता है कई सदियाँ बीत गयी,
जागे, अब उभरीं हैं यादें; अतीत की,
अब तो तस्वीरें बोलती हैं अतीत की ।

कुछ बीती बातें, सुख-दुख के साथी थे,

जो बीत गयीं, वो बातें,

अब भी उन बातों में खुशियाँ ढूढ़ँते हैं,

वो बातें चली गयी व्यतीत की,

अब तो तस्वीरें बोलती हैं अतीत की ।

उन दिनों बचपन भी बीता,

कुछ पल रो के, कुछ पल हँस के,

कुछ लड़-झगड़ के कुछ हठ के,

समय की किरणों से, सूख गयी बूँदें शीत की,

अब तो तस्वीरें बोलती हैं अतीत की ॥

## ये रात

रात की ये पुरवाई,

और होंठों पे सुनहरे गीत,

बीते रात इसी में

साथ हो अगर ,

हाथों में हाथ हो अगर,

बीते रात इसी में.

पास हो तू अगर,

ये रात हसीं हो,

बीते रात इसी में.

वो आसमाँ के तारों का टिमटिमाना,

यादों मे तेरा आना और न जाना,

बीते रात इसी में

## मंज़िल मेरा लक्ष्य है

मै तो एक मुसाफ़िर हूँ,

मंज़िल मेरा लक्ष्य है,

भूल भी जाऊँ अगर पथ

सिर्फ मंज़िल मेरा लक्ष्य है।

बस चलता चला जाऊँ,

मंज़िल मेरा लक्ष्य है,

ना मुड़ के देखूँ पीछे,

सिर्फ मंज़िल मेरा लक्ष्य है।

थक कर भी ना बैठूं,

मंज़िल मेरा लक्ष्य है,

आखिरी साँस तक चलूंगा,

सिर्फ मंज़िल मेरा लक्ष्य है।

## कुछ याद रह गया......

बस याद आता है मुझे

वो धुँधलाता सा चेहरा

बीत भी तो गए कई बरस।

पलकें कई बार झपकी

आंखे थक गयी

आंसुओं में समा गयी।

सपनों के उस जाल में

उलझ गई आँखे

सब कुछ विरान सा है।

सागर से भी गहरा

मन का सागर लिए

अभी और।

कुछ याद रह गया.....

## बिसराना

मैं जितना बिसराने की चेष्टा करता,

उससे अधिक की स्मृति होती,

मैं अपने लक्ष्य की तरफ जाना चाहता,

ना उर-बंधन से विस्मृति होती ।

हर क्षण उलझने उत्पन्न होती,

डोरी की भाँति उलझाती,

मैं उस क्षण कहीं और रहता,

ना बिन डोर सुलझाती।

# मेरे गांव की शाम

मेरे गाँव की शाम,

लेती ह्रदय को थाम।

बस रात भर का जश्न,

फिर वही थकान।

धूप भी मीठी लगती,

मन मे लाचारी का नाम

न छल कपट का भाव,

हर प्राणी का सम्मान।

सुख और दुख के साथी,

ना इससे कोई अंजान।

हर परिस्थिति में एकता,

लेते धैर्य से काम।

छोटे, बड़े, बुजुर्गों का आदर,

करते प्रेम से प्रणाम।

मेरे गाँव की शाम...........

बचपन में  मौसम की राह तकते थे ,

कब जाए ये कड़कती धूप,

धरा को सुकून आ जाए,

बस बरसात की राह तकते थे।

कीचड़ में पैर पड़ते ही ,

मन में बीती धूप गाती थी,

थम जाय ये बरसते बादल,

अब आगे ठंड की राह तकते थे।

ठंड से दांत बजते थे,

आग की लौ तापते थे,

कुहासे की बूंद छँट जाय,

बस धूप की राह तकते थे।

वो बचपन बीत गया,

वो मौसम बीत गया,

मौसम से मौसम बीत गया,

जिसमें मौसम की राह तकते थे।

आया एक नया दौर,

कंधों पर जिम्मेदारी की डोर,
वो बचपन ही ठीक था
जिसमें मौसम की राह तकते थे।

पता नहीं इस दौड़ भरी जिंदगी में,
कब बादल फटे कब धूप छँटे,
इसमें ही उलझते - सुलझते रहे,
अब नहीं मौसम की राह तकते है।

दिन का पता न चलता,
मौसम की बात, आए - जाय,
हर दिन एक जैसा लगता,
अब नहीं मौसम की राह तकते है।

वो दिन कभी ढला ही नहीं,
जिस रात का हमें इंतजार था।

एक वक़्त के सहारे चले थे,
वो वक्त और का सहारा हो गया।

मैं रोज जीता हूँ,
बस जिंदगी नहीं मिलती।

बातें बीत गयी,
यादें पीछा नहीं छोड़ती।

इतने अधूरे किस्से है,
जितने पूरे किस्से हैं।

किसी ने क्या खूब कहा है-

परदेसियों से ना अंखियां मिलाना,

उसकी सजा उम्र कैद हो गयी।

## मरे इंसान ने बतलाया

मरे इंसान ने बतलाया,

मैं नहीं हूँ,

ना आत्मा,

मैं एक शरीर था,

मेरा मन था,

ना कोई परमात्मा।

मुझमें गति थी,

पुर्जों पुर्जों में,

नसों में चाल थी,

विचार थे,

और कोई नहीं,

न दिव्य शक्ति ढाल थी।

लोंगो की तारीफ़,

और सहनशीलता,

तिरस्कार था,

मैं अपने तक था,

कोई झाँकता न था,

ना पुरूस्कार न चमत्कार था।

मैं दुःखी भी था,

मैं सुखी भी था,

मैं ही मैं था,

सब कुछ साथ था,

भीतर न दूसरा,

बस मन ही मन था।